कुलपति की कलम से

भारतीय सभ्यता की अस्मिता केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों या ऐतिहासिक उपलब्धियों से नहीं होती बल्कि उसकी उस दीर्घजीवी ज्ञान परम्परा से होती है जिसने युगों से सत्य की खोज को जीवन का परम लक्ष्य माना है। इस चिन्तन की निरंतरता में "सत्य सन्धान" शोध जर्नल अपने-आप में एक दार्शनिक उद्घोष है इस जर्नल के शोध पत्रों में "सन्धान" केवल शोध का पर्यायनहीं है अपितु वह साधना है जो ज्ञान को केवल संचित नहीं करती प्रत्युत उसे समाज के हित में प्रवाहित करती है। इस शोध पत्रिका का प्रत्येक अंक उस ही परम्परा का भाग रहेगा जो 'श्रुति' से 'स्मृति' तक, और 'अनुभव' से 'अनुसन्धान' तक की यात्रा को प्रतिष्ठित करेगी।

हमारे वेद, उपनिषद्, दर्शनों और शास्त्रों में प्रस्तुत ज्ञान, न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखते हैं, बल्कि उनमें वैज्ञानिक गहराई, तार्किक अनुशासन और व्यवहारिक उपयोगिता भी अंतर्निहित है। फिर वह पिंगलाचार्य का छंदशास्त्र हो, कणाद का परमाणु सिद्धांत, चरक-संहिता का स्वास्थ्य-दर्शन, पतंजलि का योगसूत्र, या न्याय दर्शन की तर्क प्रणाली ये सब हमारे प्राचीन ज्ञान की अकादमिक ऊँचाई को दर्शाते हैं। आज आवश्यकता है कि हम इन परम्परागत ज्ञान प्रणालियों को केवल संग्रहालयों में सहेजने के स्थान पर उन्हें समकालीन शिक्षा एवं शोध के केंद्र में पुनः स्थापित करें। "सत्य सन्धान" इस दिशा में एक सशक्त मंच है जो भारतीय बौद्धिक विरासत को वर्तमान वैश्विक विमर्श में सार्थक स्थान दिलाने का प्रयास कर रहा है और करेगा। इस दिशा में हमारा विश्वविद्यालय न केवल हिमालय की गोद में स्थित एक शैक्षिक संस्था है अपितु यह उस चिन्तन भूमि का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ ज्ञान केवल शाब्दिक नहीं सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक अभिव्यक्ति का माध्यम रहता है।

"सत्य सन्धान" के माध्यम से हम उन शोध प्रयासों को आमंत्रित और प्रकाशित कर रहे हैं जो भारतीय ज्ञान परम्परा को वैज्ञानिक कसौटियों पर अंतरानुशासनिक (interdisciplinary) दृष्टिकोण,समाज उपयोगी विमर्श को गतिशीलता प्रदान कर सकें। यह अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका वैदिक गणित, भारतीय न्याय शास्त्र, शिक्षा-दर्शन, नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, सांख्य तत्त्वमीमांसा, लोक परम्पराएं और गुरु-शिष्य परम्परा,सन्त परम्परा,तीर्थाटन और देशाटन,कला और संस्कृति सहित भारतीय वांग्मय में पुरातात्विक स्वरूप को भारतीय दृष्टि से समक्ष लाएगी।

मुझे यह कहते हुए विशेष संतोष हो रहा है कि "सत्य सन्धान" न केवल भारत के शोधार्थियों और विद्वानों के लिए, बल्कि विश्वविद्यालयों, शिक्षाशास्त्रियों, और बौद्धिक विमर्शों में रुचि रखने वाले अंतरराष्ट्रीय पाठकों और लेखकों के लिए भी एक उपयोगी मंच बन रहा है। जिसमें INK(UK)का सहयोग श्लाघनीय है। इस शोध-पत्रिका के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा अब एक वैश्विक बौद्धिक सम्वाद का अनुभाग बन रही है, जो न केवल अतीत की व्याख्या करती है प्रत्युत भविष्य की दिशा भी तय करती है। मैं "सत्य सन्धान" के सम्पादक मंडल, समस्त शोधार्थियों, समीक्षकों और लेखकों को उनके निष्ठावान योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। यह शोध-पत्रिका हमारी उस बौद्धिक यात्रा का प्रतीक है जो 'ज्ञान से कर्म की ओर, और कर्म से कल्याण की ओर' प्रेरित करती है। हमारा विश्वास है कि "सत्य सन्धान" आगे भी भारतीय ज्ञान परम्परा और समसामयिक चिन्तन के संगम का प्रभावशाली मंच बना रहेगा "सत्य का अनुसंधान केवल ज्ञान नहीं, आत्मा की जागृति है।"इसी भावना के साथ मैं इस विशेषांक की सफलता की कामना करता हूँ।

आचार्य सत प्रकाश बंसल
माननीय कुलपति, एवं मुख्य संरक्षक

विवृत्ति

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल विचारों की पद्धति नहीं बल्कि एक जीवन्त दृष्टिकोण है, जिसने भारत के सामाजिक, नैतिक, शैक्षिक और दार्शनिक आधार को शताब्दियों से पोषित किया है। यह परम्परा ऐसी नहीं है जिसे संग्रहालयों में सहेजा जाए; यह एक ऐसी धारा है, जिसे अनुभव, अनुसन्धान और सम्वाद के माध्यम से निरन्तर प्रवाहित करना आवश्यक है। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, जो भारतीय संस्कृति की समृद्ध छाया में, हिमालय की गोद में अवस्थित है, शिक्षा, शोध और नवाचार के ऐसे ही समन्वित प्रयासों को गतिशील रूप दे रहा है। इस दिशा में हमारा यह शोध प्रकाशन "सत्य सन्धान", केवल एक शोध-पत्रिका नहीं अपितु ज्ञान की खोज और मूल्यों की पुनर्रचना की यात्रा है।

विश्वविद्यालयों में शोध का मूल उद्देश्य केवल नवीन तथ्य प्रस्तुत करना नहीं होता; वह होता है ज्ञान की दिशा में सुसंगत और मूल्यनिष्ठ विचारों को सामने लाना। "सत्य सन्धान" का स्वरूप इसीलिए वैश्विक शोध पत्रिकाओं से भिन्न और विशिष्ट है। इस अधिष्ठान के लिए मैं INK(UK)की भी अनुकरणीय भूमिका है। यह शोध-पत्रिका ऐसे विचारों को आधार प्रदान करती है जो भारतीय चिन्तन की गहराई से जन्मे हैं और आज के यथार्थ के साथ सम्वाद करते हैं। इसमें प्रकाशित शोध पत्र न केवल शास्त्रीय दृष्टिकोण से हैं, बल्कि समसामयिक विषयों से जुड़कर, भारतीय परम्परा की आधुनिक पुनर्व्याख्या भी करते हैं तथा करेंगे ।

"सत्य सन्धान" में समाहित विषयों की विविधता ही इसकी व्यापकता का प्रमाण है। यह अंतराष्ट्रीय शोध-पत्रिका भारतीय दर्शन: सांख्य, योग, वेदान्त आदि की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता,आयुर्वेद एवं योग का वैज्ञानिक मूल्यांकन,प्राचीन भारतीय गणित, खगोलशास्त्र और उनका तकनीकी विमर्श,शास्त्रीय संगीत, नाट्य और सौंदर्यशास्त्र की शिक्षाशास्त्रीय भूमिका, भारतीय शिक्षा प्रणाली और गुरुकुल का तुलनात्मक अध्ययन,लोक परम्पराएं रीति-नीति और समसामयिक सामाजिक व्यवहार,भारतीय भाषाओं, लिपियों और व्याकरण पर आधारित विद्वत विमर्श,नीति और अर्थशास्त्र पर कौटिल्यीय दृष्टिकोण को समर्पित है।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपने स्थापना के आरंभिक वर्षों से ही भारतीय ज्ञान परम्परा को शोध और शिक्षण के केंद्र में स्थापित करने का संकल्प लिया है। यहाँ न केवल परम्परागत विषयों का नवपुनर्पाठ हो रहा है, बल्कि समकालीन शोध प्रविधियाँ भी अपनाई जा रही हैं, जिससे ज्ञान की यह यात्रा प्रासंगिक, प्रमाणिक और लोकमूलक बन सके। "सत्य सन्धान" इसी संस्थागत दृष्टिकोण का सशक्त शोध-प्रतिनिधि है। यह पत्रिका शोध को केवल संकलन या आंकड़ों की प्रस्तुति नहीं मानती, बल्कि इसे विचार के उस स्तर पर ले जाती है जहाँ संवेदना, संस्कृति और सम्वाद का समागम होता है। हमारा प्रयास रहेगा कि "सत्य सन्धान" शोध के वैश्विक मानकों को बनाए रखते हुए, भारतीय मनीषा की जड़ों से जुड़ा रहे। साथ ही हम युवा शोधार्थियों, नवाचारकर्मियों, शिक्षाविदों और विद्वानों को एक ऐसा मंच प्रदान करना चाहते हैं, जहाँ वे न केवल शोध प्रस्तुत करें, बल्कि दृष्टि भी निर्मित करें। मैं इस शोध-पत्रिका की सफलता हेतु संपादकीय समिति, विषय विशेषज्ञों, समर्पित शोधार्थियों और समस्त प्रकाशन सहयोगियों को धन्यवाद देता हूँ, जिनके निरंतर परिश्रम, सूक्ष्म दृष्टि और गुणवत्ता पर बल देने की प्रतिबद्धता ने इस पत्रिका को वह स्तर प्रदान किया है, जिसकी आज देश और विश्व को आवश्यकता है।

"सत्य सन्धान" इसी मूल मंत्र के साथ आगे बढ़े यही मेरी शुभकामना है।

सुमन शर्मा
कुलसचिव
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

"Sattya Sandhan" - A Peer-Reviewed Interdisciplinary Research Journal

PATRON

Professor S. P. Bansal
Vice Chancellor
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India

Editor in Chief

Prof. Suman Sharma
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India

Editor

Prof. Sandeep Kulshreshtha
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India

Associate Editors

Prof. Ashish Nag
Prof. Inder Singh Thakur
Prof. Amit Gangotia
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India

Assistant Editors

Dr. Debasis Sahoo
Dr. Arun Bhatia
Dr. S. Sundararaman
Dr. Harish Kumar
Dr. Amrik Singh Thakur
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, India

Advisory Board
(International)

Professor Sunil Poshakwale, *Cranfield University, UK*

Professor J. P. Tamvada, *Kingston University London, UK*

Professor Maruthi Gowda, *University of Greenwich, UK*

Professor D.A.C. Suranga Silva, *University of Colombo, Sri Lanka*

Dr. Sameer Rahatekar, *Cranfield University, UK*

Dr. Mehul Chattbar, *Coventry University, UK*

Dr. Mohit Dahiya, *University of Sunderland, London*

Dr. Guido Peter Broich, *Paviya University, Italy*

Advisory Board
(National)

Prof. (Rtd.) Kailash Chandra Sharma, *Former Vice Chancellor, Kurukshetra University*
Prof. Arvind Bhatt, Dean Planning, *Himachal Pradesh University, Shimla, Himachal Pradesh*
Prof. Ganesh Dutt Sharma (Rtd), *Sanjay Gandhi Public School, Sanjauli, Shimla*
Professor Ishwar Bhardwaj, *Dean (Academics).Dev Sanskriti Viswhavidyalaya Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand*
Prof. Kulbhushan Chandel, *Department of Commerce, Himachal Pradesh University, Shimla*
Prof. Madhuri Sukhija, *Department of Poltical Science, Mata Sundri College for Women, Mata Sundri Lane, New Delhi*
Prof. Shashi Kant Sharma, *Department of Journalism & Mass Communication, Himachal Pradesh University*
Prof. Manukonda Rabindranath, *Chairperson, Centre for Media Studies, Jawaharlal Nehru University*
Professor N. J. Raju, *Jawaharlal Nehru University, New Delhi*
Professor Mohinder Chand, *Kurukshetra University Kurukshetra*
Professor Chander Mohan Parsheera, *Himachal Pradesh University, Shimla.*
Professor Prashant Gautam, *Punjab University, Chandigarh*.
Professor Lavkush Mishra, *Dr B.R. Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh*
Professor Vinay Chauhan, *Jammu University.*
Professor Nitin Vyas, *Himachal Pradesh University, Shimla.*

Professor Y. Venkata Rao, *Pondicherry University*
Professor Raja, *Jawaharlal Nehru University, Delhi.*
Professor Satya Bhusan Dash, *Indian Institute of Management, Lucknow*
Professor Pawan Kumar Singh, *Director, Indian Institute of Management, Tiruchirappalli*
Professor Deepak Raj Gupta, *Jammu University*
Dr. Pawan Gupta, *Nodal Officer, NIWS-IITTM, Goa*
Professor Dileep M.R., *Director, Kerela Insitutute of Tourism and Travel Studies (KITTS)*
Professor Sunil Kumar Kabia, *Bundelkhand University, Jhansi*
Prof. Mahesh Chand Garg, *Haryana School of Business Guru Jambheshwar University*
Prof. Akhilesh Kumar Dubey, *Department of Sanskrit, Swami Shraddhanand College (University of Delhi)*

Editorial Board

Professor Sandeep Kulshreshtha, *Director, Centre for Ecological, Adventure, Health and Cultural Tourism, Central University, Himachal Pradesh.*

Professor Prashant Gautam, *Professor, University Institute of Hotel and Tourism Management, Punjab University, Chandigarh*.

Professor Surya Rashmi Rawat, *Professor, Department of Himachal Pradesh Kendriya Vishwavidyalaya Business School, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor Ambrish Kumar Mahajan, *Department of Environmental Sciences, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor Narayan Singh Rao, *Department of History, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor B.C. Chauhan, *Department of Physics & Astronomical Science, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor Sanjeet Singh, *Professor, School of Humanities and Social Sciences, Department of Economics, Central University of Himachal Pradesh, India.*

Professor Suneel Kumar, *Department of Commerce, Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi*.

Professor Ashish Nag, *Department of Tourism and Travel, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor Rajesh Sharma, *Department of Physics, Sardar Patel University, Mandi, Himachal Pradesh*.

Professor Inder Singh Thakur, *Centre for Deen Dayal Upadhyay Studies, Central University of Himachal Pradesh*.

Professor Nirupama Singh, *Department of Visual Arts, Central University of Himachal Pradesh*.

Professor Amit Gangotia, *Department of Tourism and Travel, Central University of Himachal Pradesh.*

Professor Sandeep Malik, *Institute of Hotel & Tourism Management, Maharshi Dayanand University, Rohtak*.

Professor Sandeep Guleria, *Department of UITHM, Chandigarh University, Mohali, Punjab.*

Dr. Chaman Kashyap, *Associate Professor, Department of Commerce, Central University, Himachal Pradesh.*

Dr Manpreet Arora, *Associate Professor, Department of Himachal Pradesh Kendriya Vishwavidyalaya Business School, Central University of Himachal Pradesh*.

Dr. Ashok Kumar, *Associate Professor, Department of Hindi & Indian Languages, Central University of Himachal Pradesh*.

Dr. Vipin Nadda, *Senior Lecturer, University of Sunderland, London, U.K.*

Dr. Gourishankar Sahoo, *Department of Physics & Astronomical Science, Central University of Himachal Pradesh.*

Dr. Parveen Sadotra, *Assistant Professor, Department of Computer Science & Informatics, Central University of Himachal Pradesh, India.*

Dr. Vivek Balyan, *Assistant Professor, Department of Tourism and Hotel Management, Central University of Haryana.*
Dr. Amit Sharma, *Lecturer, BPP University, London*
Dr. Anil Kumar Singh, *Tourism Management, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India.*
Dr. Priti R Nagal, *Institute of Vocational Studies - Tourism, Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla*.
Dr. Amit Katoch, *Assistant Professor, Govt Degree College, Dharamshala, Himachal Pradesh.*
Dr. Chinmaya Maharana, *Assistant Professor, Department of Environmental Sciences, Central University of Himachal Pradesh.*
Dr. Jitender Kumar, *Assistant Professor, Department of Plant Sciences, Central University of Himachal Pradesh.*
Dr. Bhupendra Singh, *Assistant Professor, Department of Physics, Central University of Jharkhand.*
Dr. Mithun Dutta, *Assistant Professor, Banaras Hindu University.*
Dr. Kamal Singh, *Assistant Professor, Department of Economics, Central University of Himachal Pradesh*.

Sattya Sandhan – A Peer-Reviewed Interdisciplinary Research Journal

Himachal Pradesh Central University, Dharamshala (Bharat)

Himachal Pradesh Central University was established on January 20, 2010, under the Central University Act 2009 (No.25/2009) passed by the Parliament of the country. In the field of innovation and research based on inter-disciplinary parameters, it is leading in the country with a different identity. In strengthening the research and publication system, including the deliverables of education in curriculum planning, Central University is following its skyward journey by following the holistic approach. Committed to its goal with a new vision and new resolutions. Not only this, the criteria determined by the university through innovation and the teaching-learning process are commendable in themselves. A touching exploration of human values and principles, localism, and society. The upliftment of the last man is the principal vision of our study centre. That is why the motto of the university is-

"Neti Neti Charaiveti Charaiveti"

Vision of Sattya Sandhan

"Sattya Sandhan – A Peer-Reviewed Interdisciplinary Research Journal of Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, (Bharat).

The main objective of this journal is to present the history, politics, public administration, and literary thought of the nation, including literature and philosophy from the Indian point of view, to the society through research. In the context of the nomenclature "Sattya Sandhan," the Satya represents Truth, the way of thinking, and the philosophy of the nation of Bharat, while "Sandhan" represents the continual efforts to achieve it.

The research papers of scholars and research scholars will be sent to the review committee, and a peer-reviewed audit process will be followed. After a thorough review process, the papers will be accepted for publication in *Sattya Sandhan.* The author's copy will be sent to the authors of selected research papers as a matter of respect. "Sattya Sandhan" will also give words to the integral philosophy of the Bharatiya rashtra and the integrated discussion of Purusharth Chatushtya in Bharatiya Darshan and the religious governance system.

Goals and Objectives

"Sattya Sandhan", along with Bhartiya Darshan and Bhartiya Itihaas, will present all those characteristics of ancient literature in front of society through innovation and research work. The real thinking array of the nation of Bharat, whose original sources have been our Vedas, Upanishads, how the aura of knowledge and philosophy contained in them is relevant in today's time, this research journal has asked the scholars to put those criteria in front of the learner/researcher and the society through research method. When a research journal is published from any study centre or the university, then the related advisory board and the subject expert committee discharge the role of setting up a new dimension under the guidance of the patron, with the joint work of the managing editor and editor.

The whole team of "Sattya Sandhan" will determine the publication journey with two marks in one academic session by its observation and examination, by realising the inter-disciplinary approach in a concise manner on the identified subjects. The purpose

of this journal will be to keep all those points in front of society, which should be kept in the form of publication through research. Here, every subject will be closely monitored by the Advisory Board and the Subject Expert Committee. All the Sudhi Acharyas who are associated with “Sattya Sandhan” will discuss both points by setting a goal and deciding how the research investigation should be done. After that, they will make the scholars aware of the outline of the subject for writing the research paper. Thus, " Sattya Sandhan " with its annual issue will come in the form of a publication every academic year.

Research area of “Sattya Sandhan”

The key areas of publication include, but are not limited to:

I. *Areas of research in “Satya Sandhan” are Bhartiya Shashtras- (Vedas, Purana, Aarnyak), Bhartiya Itihaas*

II. *Ancient and Modern Periods, Deshatan (Tourism Management), Vanijya (Commerce)*

III. *Political Science, Political System of Bharat*

IV. *Integration in Public Administration and Social Upliftment*

V. Central University of Himachal Pradesh *Thought and Bhartyiya Darshan*

VI. *Society & Culture and Journalism*

VII. *History of Literature and Thoughts*

VIII. *Cultural Nationalism,*

IX. *Antyodaya, Bhartiya Chintan and Western Thought*

X. *Economics in the spirit of Bhartiya Arth Chintan Sumangalam,*

XI. *Management with such topics, this journal will mark the areas of research in its journey.*